रयत्. Avertere *oculos*. Ragh. 6.30.: अङ्गराजाद् अवतार्य चक्षुः.

c. उत् 1) transgredi, trajicere. N. 12.112.: उत्तरन्तन् (sic legendum pro उत्तरन् तन्) नदीं रम्याम्; Ragh. 12.71.: तेनो ’त्तीर्य पथा लङ्काम्. 2) egredi, emergere. Ragh. 2.17.: पल्वलोत्तीर्णवराहयूथ; Mah. 3. 211.: जलाद् उत्तीर्य. — *Caus.* 1) servare. Mah. 8306.: उत्तारयति सन्तत्या दश पूर्वान् दशा ’परान्. 2) evomere. Man. 11.160.: अज्ञानभुक्तन् तू ’त्तार्यम्.

c. उत् praef. प्रति *c. ablat.* egredi; descendere. R. Schl. II. 103.31.: प्रत्युत्तीर्य नदीतटात्.

c. उत् praef. सम् 1) transgredi. Bhatt. 6.59.: समुत्तरन्ताव् अव्यथ्यौ नदान्. 2) *c. ablat.* egredi. Mah. 1. 3283.: जलात् समुत्तीर्य कन्यास् ताः.

c. निस् 1) transgredi. Ragh. 3.7.: निस्तीर्यच दोहदव्यथाम्; Hit. 68.4.: स निस्तरति दुर्गाणि. — *Caus.* servare, liberare. Man. 3.98.: निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चा ’पि किल्विषात्.

c. प्र extendere, dilatare. Mah. 3.8149.: प्रतरेच्च कुलम् पुण्यम्; Rig.-V. 25.12.: प्र ण आयूंषि तारिषत् «nostras vitas longas faciat»; 33.13.: प्र स्वाम् मतिम् अतिरत् (= अतरत्). — *Atm.* crescere. Rig.-V. 104. 4.: प्र पूर्वाभिस् तिरते राष्टि शूरः «implentibus *eum aquis* crescit *et* splendet heros. — *Caus.* extendere. Mah. 3.8647.: एषा भागीरथी पुण्या ... प्रतार्यमाणा कूटेषु. 2) decipere. Mr. 161.10.: किम् माम् प्रतारयसि.

c. वि concedere, dare. N. 26.24.: स्वम् अंशम् वितरामि ते; 28.: यो मे वितरसि प्राणान्. Mah. 1.4498. A. 3.47.

c. सम् *i. q. simpl.* H. 1.14.: सन्तीर्य दूरपारम् भुजप्लवैः; Man. 9.161.: सन्तरन् जलम्; Bh. 4.36. — *Caus.* 1) traducere. R. Schl. II. 89.8.: गङ्गाम् ... सन्तारयन्तु नः. 2) ferre, portare, vehere. Mah. 3.10857.: माद्रीनन्दनकाव् उभौ दुर्गे सन्तारयिष्यामि यत्रा ’शक्तौ भविष्यतः. 3) servare. Man. 9.139.: दौहित्रो ऽपि ह्य् अमुत्रै ’नं सन्तारयति.

तेजस् *n.* (r. तिज् s. अस्) 1) splendor. Bh. 7.9. Su. 4.24. 2) vis, robur. In. 4.8. N. 19.13. 3) semen virile. Ram. I. 31.18.42. (Hib. *teas* «warmth, fervor».)

तेजस्विन् (a praec. s. विन्) splendore, vi, robore praeditus. Su. 1.2. Bh. 10.36. N. 20.41.

तेजोमय (a तेजस् s. मय) splendidus. Su. 4.22. Bh. 11.47.

तेम *m.* (r. तिम् s. अ) humor, mador, vapor. Am.

तेव् 1. *A.* (देवने) ludere. *Cf.* दिव्.

तैल *n.* (a तिल s. अ) oleum sesami. Ragh. 8.38.

तोक *m.* proles. Am.

तोड् 1. *P.* *i. q.* तूड्.

तोत्र *n.* (pro तोत्त्र, r. तुद् s. त्र) baculus aculeatus, quo elephanti concitantur.

तोमर *m. n.* vectis ferreus. Dr. 8.6.

तोय *n.* aqua. Ragh. 8.94. (Slav. *taja-ti* liquare.)

तोयद *m.* (aquam dans, e praec. et द dans) nubes. Ragh. 6.65.

तोयधर *m.* (aquam tenens, e तोय aqua et धर tenens) nubes.

तोरण *m. n.* (ab intrando dictum, r. तुर् s. अन) porta; arcus portae ornamentis instructus. N. 5.3. Ragh. 1.41. 7.4. (Cf. द्वार् et rad. त्वर्.)

तोलन *n.* (r. तुल् s. अन) levatio. R. Schl. I. 66.19.

तोष *m.* (r. तुष् s. अ) gaudium. Hit. 74.5.

त्यक्त v. त्यज्.

त्यज् 1. *P. interdum A.* deserere, relinquere. N. 9.31.: नचा ’हन् त्यक्तुकामस् त्वाम्; 33.: न तु मान् त्यक्तुम् अर्हसि; *ibd.*: मान् त्यजेथाः; Bh. 4.9.: त्यक्त्वा देहम् पुनर्जन्म नै ’ति. Renuntiare, cedere, dimittere, abjicere. Br. 3.15.: त्यक्तव्याम् मास्व सन्त्यज; N. 2.17.: त्यक्तजीवितयोधिनः; Bh. 1.9.: शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः. (Hib. *treigim* «I leave, forsake», *treigthe* «forsaken» = त्यक्त; *treigean* subst. «leaving, forsaking, abandonment» = त्यजन; *treigtheoir* «a deserter, forsaker» = त्यक्तृ, *acc.* त्यक्तारम्, mutatis semivocalibus *y* et *r*, v. gr. comp. 20.)

c. परि *i. q. simpl.* H. 1.3.: नावम् परित्यज्य; Br. 1.27.28.